शोध - प्रस्ताव

पंचपरगनिया काव्य में सामाजिक चेतना: एक अध्ययन

पीएच. डी उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

संकाय - जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष: 2025

शोध निर्देशक

डाॅ. अरविन्द कुमार

सहायक प्राध्यापक

खोरठा विभाग

डोरंडा काॅलेज, राँची

शोधार्थी

मधु सूदन महतो

एम.ए (पंचपरगनिया)

यू.जी.सी नेट, जे.आर.एफ

प्रस्तावना

आज पंचपरगनिया भाषा झारखंड के द्वितीय राजभाषा के रूप में स्थान मिला है तो इसके पीछे साहित्यकार कलाकार एवं रचनाकार का योगदान सबसे ज्यादा है। इनके दूरगामी सोंच और चिंतन के परिणाम से ही आज पंचपरगनिया भाषा इतना लोक प्रिय एवं इस क्षेत्र की संस्कृति पूरे दुनिया में गले का माला बन गया है। पंचपरगनिया के सभी कलाकार एवं रचनाकार जिन्होंने यहां के साहित्यिक समृद्धि एवं कला को बचाएं रखने के लिए अपरिमित परिश्रम किए हैं उन सभी को मेरे हृदय से नमन है। पद्य साहित्य, लोक साहित्य, गद्य साहित्य सबसे रोचक एवं लोक प्रिय विधा है जो मनुष्य के जन्म से ही आरंभ होता है तथा किसी महत्वपूर्ण घटना पर आधारित होता है। पंच परगनिया के प्रारंभिक दौर के कविती प्रधान थे क्योंकि उस समय कविता का लक्ष्य केवल मनोरंजन करना ही था। कालांतर में अनेक मोड़ आए, फलस्वरूप पद्य एवं गीत को नई दिशाएं हुई। कवि एवं रचनाकारों ने फैला हुआ ग्रामांचल भू-भागों, नगर से अछूती पिछड़ी जातियों की रहन ट सहन, वेशभूषा, संस्कृति पर्व-त्योहार आदि को नए आयामों में जोड़ कर पद्य का. सृजन किया। बदलती हुई लोक संस्कृति का स्वरूप और विकास के अंतर्गत पंचपरगनिया काव्य में अनेक जातियों के जीवन पर केंद्रित सामाजिक संस्कृति अपनी निजी महत्वपूर्ण पहचान बना ली है। यह नदी की प्रवाह तरह है जो निरन्तर आगे बढ़ता जाता है उसमें न कोई रुकावट आती है और न कोई भंग करता है।

प्रोत्साहन:-

दक्षिणी छोटानागपुर के रांची जिला मेरा जन्मभूमि है और मेरी मातृभाषा पंचपरगनिया होने के कारण मुझे शुरु से ही इस भाषा के प्रति लगाव रहा है। पंचपरगनिया काव्य यहां की नारी समस्या, पारिवारिक स्थिति, सामाजिक संस्कृति को चित्तवृत्ति हमारे सामने पेश किया है। काव्य साहित्य हमारे जीवन में विभिन्न आयामों को बड़ी सफलता के साथ अंकित किया है। इन्हें अपने विवेचन के दायरे में लाने का एक छोटा सा प्रयास इस शोध प्रबन्ध द्वारा किया गया है।

अनुमान:-

हमें बचपन से ही गांव मुहल्ले में पंचपरगनिया कविता और लोक गीतों का वर्णन सुनने को मिलते थे तथा उन गीतों में बहुत मिठास होते हैं। जिसे सुनके मन तृप्त हो जाते थे तथा नाच गान, गीत कविता का भी आयोजन किया जाता था। इस दौरान मुझे पंचपरगनिया भाषा में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने अवसर मिला और अब यह सुनने और जानने के बाद पीएच. डी में पंचपरगनिया काव्य का सामाजिक चेतना पर शोध कार्य करने का इच्छा मन में जगा। तब एक परिकल्पनाध् अनुमान तैयार कर इसे साकार रूप देने के लिए तैयार हुआ हूँ।

शोध प्रविधि:-

प्रस्तावित शोध कार्य का आधार वैज्ञानिक सर्वेक्षण पद्धति से होगा जिसमे वास्तविक एवं प्रमाणित तथ्यों

का समावेश होगा। इस शोध कार्य को पूरा करने हेतु मुझे विश्वनीय सूचनाओं, तथ्यों, आंकड़ों आदि को एकत्र करने एवं अध्ययन पद्धति को स्पष्ट करने हेतु मुझे निम्न शोध प्रविधियों का साहारा लेना पड़ सकता है

ऽ साक्षात्कार

ऽ सर्वेक्षण विधि

ऽ प्रश्नावली विधि

ऽ अनुसूची विधि

ऽ अवलोकन विधि

ऽ आलोचनात्मक विधि

शोध के उद्देश्य:-

किसी शोध कार्य को आरंभ करने के पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती हैइस शोध प्रबन्ध का उद्देश्य निम्नलिखित है -

1) पंचपरगनिया भाषा साहित्य को सुदृढ़ करना।

2) पंचपरगनिया भाषा साहित्य का उत्पत्ति का अध्ययन करना।

3) पंचपरगनिया भाषा विशेष स्थिति का सही वर्णन करना।

4) देश एवं समाज सामाजिक, और साहित्यिक विकास में योगदान देना।

5) पंचपरगनिया कलाकार का सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण के माध्यम से समाज के जन जीवन एवं सामाजिक पक्ष पर प्रकाश डालना।

6) पंचपरगनिया भाषा साहित्य का गहन अध्ययन करना।

शोध का महत्वः-

1) पंचपरगनिया भाषा प्रेम एवं अपनी निजी संस्कृति के प्रति लोगों का दिलचस्पी बढ़ेगा और एक नई जागृति उत्पन्न होगी।

2) सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र के लिए लाभकारी साबित होगा।

3) इस शोध से बौद्धिक एवं सामाजिक विकास में मानव को नई दिशाएं जागृत होगा।

4) इसके समकालीन पंचपरगनिया भाषा की कलाकृति समीक्षा पर शोध के लिए आदर्श साबित होगा।

5) इस शोध से भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।

6) अन्य झारखंडी भाषाओं में अनुसंधान हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

शोध विषय का सीमांकन:-

इस शोध कार्य में पंचपरगनिया काव्य का सामाजिक चेतना ही मुख्य रूप से केंद्रित रहेगा।

शोध से ज्ञान वृद्धि की संभावनाएं:-

शोध कार्य से ज्ञान वृद्धि अर्थात कार्य द्वारा हमें जो भी प्राप्त होता है वह हमारे लिए उपयोगी तो होता ही है साथ ही साथ ज्ञान अनंत और असीम होता है। अतः मैं भी प्रयत्न करूंगा कि समाज को अपरिमित सार्थक ज्ञान प्राप्त हो सके। अनुसंधान के दौरान हमें ज्ञान, अर्थ प्रकृति विधियों आदि कई रूपों द्वारा होता है जो हमारे अनुसंधान कार्य के लिए सहायक सिद्ध होता है। जिससे अनुसंधान सरल और सुस्पष्ट होता है इसलिए मैं भी अनुसंधान कार्य

को सुस्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने का प्रथैसि करूंगा। ताकि इस विषय के भावी शोधकर्ता के रूप लाभकारी और ज्ञान प्रदानदायक सिद्ध हो सके।

शोध विषय की प्रासंगिकता:-

किसी शोध कार्य को करने के पीछे एक लक्ष्य छिपा रहता है वैसे ही पंचपरगनिया काव्य साहित्य का शोध करने के पीछे एक सार्थक उद्देश्य छिपा है। पंचपरगनिया कवि एवं कलाकार सामाजिक विडंबना, भ्रष्टाचार, पारिवारिक समस्या को इंगित किया गया है। साथ ही गरीबी अज्ञान, सामाजिक शोषण, राजनीतिक षडयंत्र जेसे सवालों को कवियों ने उठाएं हैं।

पंचपरगनिया सामाजिक संस्कृति में यहां का जादुई सार्थक रूप से प्रयोग किया गया है जो पाठकों को काफी हद तक आकर्षित करता है।

पंचपरगनिया काव्य में सामाजिक चेतना: एक अध्ययन

अध्यायीकरण

प्रस्तावना:-

1) शोध कार्य की प्रासंगिकता

2) शोध विषय संबंधित पूर्व अध्ययन

3) प्रस्तुत शोध अध्ययन की तकनीकें

अध्याय - 1

पंचपरगनिया काव्य की परिभाषा और रूप

क) प्रबन्ध काव्य

ख) मुक्तक काव्य

ऽकविता

ऽगाना

अध्याय - 2

पंचपरगनिया काव्य का उद्भव और विकास

क) काल विभाजन

ख) पंचपरगनिया के प्रकाशित काव्य

अध्याय - 3

काव्य में सामाजिक चेतना की अवधारणा

क) समाज और सामाजिक चेतना

ख) पंचपरगनिया क्षेत्र का सामाजिक परिवेश

ग) सामाजिक रीति-रिवाज और रूढ़ियां

अध्याय - 4

पंचपरगनिया के प्रबन्ध काव्यों में सामाजिक चेतना

क) प्राचीन काल के प्रबंध काव्यों में सामाजिक चेतना

ख) मध्यकालीन प्रबन्ध काव्यों में सामाजिक चेतना

ग) आधुनिक काल के प्रबंध काव्यों में सामाजिक चेतना

अध्याय - 5

पंचपरगनिया मुक्तक काव्य में सामाजिक चेतना

क) कविता में सामाजिक चेतना

ख) गीत में सामाजिक चेतना

अध्याय - 6

पंचपरगनिया काव्य में समाज सुधार के विचार

क) प्रबंध काव्य में समाज सुधार के विचार

ख) मुक्तक काव्य में समाज सुधार के विचार

Sकविता में

Sगीत में

उपसंहार

परिशिष्ट

S आधार ग्रंथों की सूची

S पत्र पत्रिकाओं की सूची

S संदर्भ ग्रंथों की सूची

s साक्षात्कार सूची

नोट:- शोध कार्य के दौरान शोध प्रारूप में आवश्यकता अनुसार आशिक संशोधन किया जा सकता है

शोध निर्देशक — शोधार्थी

डॉ. अरविन्द कुमार — मधु सूदन महतो

सहायक प्राध्यापक — डण्। (पंचपरगनिया)

खोरठा विभाग — यू.जी.सी. नेट, जे. आर. एफ

डोरंडा का ॅलेज, राँची

आधार ग्रंथ

1) दास नरेंद्र कुमार - कांची नदी

2) महतो प्रो0 दीनबंधु, महतो प्रो0 परमानंद - बांबरा (पंप कबिता)

3) स्वांसी डॉ0 अम्बिका - पंचपरगनिया लोकगीत, प्रथम संस्करणरू 2015

4) गुप्त सुनीता - पंचपरगनिया लोक साहित्य

5) विद्याभूषण - झारखंड समाज संस्कृति और साहित्य

6) महतो प्रो0 परमानंद-पंचपरगनिया लोकगीत

7) महतो प्रो0 दीनबंधु -पंचपरगनिया मध्यकालीन काव्य भाग-1

8) त्रिपाठी विश्वनाथ-मीरा की काव्य

9) जैन निर्मला -प्लेटो के काव्य-सिद्धांत

10) सिंह डॉ0 पराग किशोर-जागरण (पंचपरगनिया काइब)

11) सिंह पराग किशोर-पंचपरगनिया केर मध्यकालीन कबि आर उनकर रचना

12) महतो डा ॅ0 चन्द्र मोहन - दुइ डाइर बारो बरन फूल (पंचपरगनिया गद-पद)

13) सिंह पराग किशोर - आधुनिक पंचपरगनिया साहितकार आर कलाकार

14) मुण्डा एंथोनी - जीवन डहर (पंचपरगणनिया काइब)

15) र्शामा रघुशरण - रामकथा और रामचरितमानस

16) श्रीवास्तव डा ॅ0 राजेश -रामायण दर्शनम

17) माहेश्वरी प्रेमचंद - हिंदी रामकाव्य का स्वरूप और विकाश बदलते युगबोध के परिप्रेक्ष्य में

18) सिंहा डा ॅ0 रमेश प्रसाद - मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा

19) पाण्डेय राजेंद्र कुमार - रस - छनद - अलंकार (दोष-विवचन सहित)

20) बाली तारकनाथ - पाश्चात्य काव्यशास्त्र

21) चैधरी इंदनाथ - निराल के काव्य पर बांग्ला का प्रभाव

संदर्भ ग्रंथ

1) स्वांसी डॉ0 अम्बिका - बाउल

2) महतो प्रो दीनबंधु - कवि रामकृष्ण गांगुली केर गीत

3) कुमार डॉ0 मनोज - पंचपरगनिया लोक गीत में रस विधान

4) जैन निर्मला - काव्य-चिंतन की पश्चिमी परंपरा

5) द्विवेदी महावीर प्रसाद - साहित्य विचार

6) डॉ0 भुवनेश्वर - क्षेत्रीय एवं जनजातियां भाषा साहित्य

7) शर्मा रामविलास - भाषा युगबोध और कबिता

8) सिंह रसाल - भारतीयता का काव्य: भक्तिकाव्य

9) पाण्डेय मंजर - हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान

10) महतो डा॓0 परमानंद - पंचपरगनिया खाट' साहित

11) सिंह डा॓0 दिनेश प्रसाद - पंचपरगनिया लोक साहित

12) महतो बंशीधर - मधु सत (पंचपरगनिया काइब)

13) महतो प्रो0 दीनबंधु, प्रीतम संतोष साहु - झुमर संगीत

14) नागार्जुन - विद्यापति के गीत

15) बोधिसत्व - महाभारत: यथार्थ कथा (आलोचना)

16) मिश्र विद्ययानिवास - लोक मानस में राम: समाज और संस्कृति

17) ठाकुर रवीन्द्रनाथ - गीतांजलि

18) शाह गुणवन्त - रामायण: मानवता का महाकव्य

19) पोध्दार वासुदेव - रामायण महाभारत (काल, इतिहास, सिध्दंत)

20) मिश्र विद्यानिवास - श्रीकृष्ण रस

21) प्रेमशंकर - भक्ति काव्य का समाज - दर्शन

22) बाली तारकनाथ - भारतीय काव्यशास्त्र

23) मिश्र शिवकुमार - भक्तिकाव्य और लोक - जीवन